'' अलौकिक च्यवनप्राश खाइए प्रभू के गुण गाइए ''

यदि आप हृष्ट पुष्ट बनकर अपने व्यक्तित्व को महान बनाना चाहते हो तो निम्नलिखित दवाई का सेवन कीजिए।

सामग्री :- सच्चाई के फूल 5 ग्राम, ईमानदारी के पत्ते 15 ग्राम, मिलनसारिता 400 ग्राम, संगठन का दूध 2 लीटर, मधुरवाणी की मिठास 50 ग्राम, उदारता का अर्क 2 ग्राम, परोपकार की जड़ 20 ग्राम, शान्ति की तरलता 50 ग्राम, स्वदेश प्रेम का रस 30 ग्राम तथा ज्ञानामृत का जल अपनी आवश्यकतानुसार जल्दी जल्दी एकत्रित कर लीजिए।
और फिर क्या ! बना डालिए, विधि तो नीचे लिखी ही है ————————-

दवाई बनाने की विधि :- उपरोक्त सभी सामग्री सबसे पहले आत्मिक कढ़ाई में श्रद्वा का शुद्व घी डालकर प्रेम के चुल्हे पर धीमी योगाग्नि से अच्छी तरह से भून लें। फिर इसे दृढ़ता के सिलबट्टे में अच्छी तर कूट कूटकर बारीक कर लें फिर दूध को अच्छी तरह गर्म कर उसमें यह सभी सामग्री एवं मिठास मिलाकर उसे अच्छी तरह से पकने दें। तत्पश्चात नीचे उतार कर ठण्डा करने के बाद शुद्व मन रूपी टंकी में दिव्य बुद्वि रूपी कपड़े से छान लीजिए और अपने मस्तिष्क रूपी बोतल में भरकर रखिए।

सेवन विधि :- इस दवा को प्रतिदिन सुबह शाम संतोष रूपी जल के साथ इन्साफ के दो चम्मच से सेवन करें। विशेष ठण्ड के दिनों में इसे खांए तो अत्याधिक लाभ होता है।

परहेज :- क्रोध की मिर्चि, अंहकार का तेल, लोभ के पापड़, बेइमानी का नमक और ईर्ष्या का आचार का सेवन वर्जित है। अन्यथा दवाई असर नहीं करेगी।

ध्यान रहे :- ठण्डी कितनी भी कड़क हो लेकिन काम की अग्नि से जरा भी सेक न लगने पाए।
इस सारी कार्यवाही को अंजाम देने में एक बाप की ही याद रहे तो ही यह दवाई अपना असर दिखाएगी।

अब इन्तजार किस बात का शिव बाबा की याद में खुराक खाना जारी रखिए।